VIBRANT GANGA

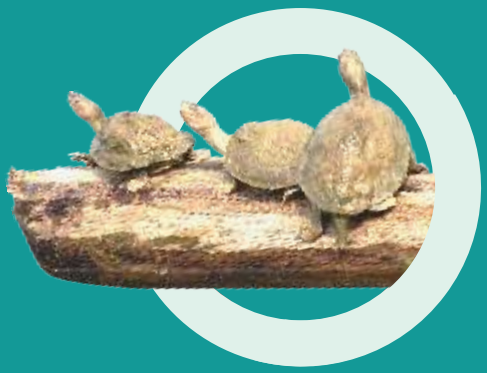

रामगंगा नदी

कॉर्बेट की जीवनदायनी

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- रामगंगा नदी उत्तर तट पर गंगा नदी से मिलने वाली पहली प्रमुख सहायक नदी है।
- रामगंगा नदी निचले हिमालयी (गैरसण के पास) क्षेत्र में 2,926 मीटर समुद्रतल की ऊंचाई से दुधाताली रेंज, दीवालीखाल गाँव के पास से निकलती है। यह लगभग 596 किलोमीटर की यात्रा करते हुए उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश से होकर कन्नौज जिले में गंगा नदी में जाकर मिलती है।
- रामगंगा नदी के जलसंभर क्षेत्र में काफी विभिन्नता है, जो खड़ी पहाड़ियों से लेकर गहरी और संकरी हिमालय की घाटियों और विशाल जलोढ़ मैदान तक है।
- बान, खोह, गंगन, गागास, अरिल, कोसी, मंडल, नायर और बदनगढ़ रामगंगा की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं।

मुख्य विशेषताऐं

- रामगंगा बेसिन (32,493 वर्ग किलोमीटर) के कुल जलग्रहण क्षेत्र का 64% बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश और शेष 36% उत्तराखण्ड में पड़ता है।
- नदी दो जैव–भौगोलिक क्षेत्रों, हिमालय और गंगा के मैदानों से होकर गुजरती है।
- नदी ऊद्बिलाव की दो प्रजातियों, मगरमच्छों की दो प्रजातियों, कछुओं की सात प्रजातियों, जलीय और जल से संबंधित पक्षियों की 90 प्रजातियों और मछली की 102 प्रजातियों का आवास स्थान है।

रामगंगा नदी को तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है–

01 ऊपरी क्षेत्र (दिवाली खाल से कालागढ़ बांध)

02 मध्य क्षेत्र (कालागढ़ बांध से खोह नदी का संगम)

03 निचला क्षेत्र (खोह नदी संगम से गंगा संगम)

- सात कछुओं की प्रजातियाँ जैसे, ढोन्ड (*बटागुर ढ़ोंगोका*), काला चित्तीदार कछुआ (*जियोक्लेमीस हैमिल्टोनाइ*), तिलहारा कछुआ (*पंगशुरा टेक्टा*), चपन्त कछुआ (*पंगशुरा स्मिथी*), पचेरा (*निल्सोनिया गैंजेटिका*), पचौरिया (*पंगशुरा टेंटोरिया*) और सुन्दरी (*लिसीमिस पंक्टाटा*) नदी से दर्ज हुए हैं।

संकटग्रस्त (EN) प्रजातियाँ

सरीसृप
काला चित्तीदार कछुआ

पक्षी
पनचीरा, ब्लैक–बेलीड टर्न, स्टेपी ईगल

मछली
गोल्डन महासीर

स्तनधारी
गांगेय डॉल्फिन

प्रमुख संरक्षित क्षेत्र

कॉर्बेट नेशनल पार्क

गंभीर रूप से संकटग्रस्त (CR) प्रजातियाँ

सरीसृप
घड़ियाल,
ढोन्ड

रोचक तथ्य

- नदी की पारिस्थितिक महत्त्वता के कारण, कॉर्बेट नेशनल पार्क को 1954 से 1957 तक तीन वर्षों की संक्षिप्त अवधि के लिए रामगंगा राष्ट्रीय उद्यान का नाम दिया गया था।
- रामगंगा नदी का तट गंगा दशहरा उत्सव के लिए भी प्रसिद्ध है।
- मुरादाबाद, जो पीतल के बर्तन उद्योग के लिए प्रसिद्ध है, रामगंगा नदी के किनारे स्थित है।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- कालागढ़ बाँध और हरेवाली बैराज से व्यापक जल निकासी के कारण नदी के बहाव में काफी कमी आ रही है। बांध अनुदैर्ध्य बाधाओं के रूप में भी कार्य करते हैं, जिससे आवास विखंडन होता है।
- मुरादाबाद शहर और उसके आसपास छोड़े गए अनुपचारित औद्योगिक अपशिष्ट ने नदी के पानी की गुणवत्ता को खराब कर दिया है।
- नदीतल खनन की वजह से नदी प्रणाली अवरूद्ध होती जा रही है।
- बालू भित्तियों (सैंडबार) पर खेती होने की वजह से कछुओं और आईलैंड नेस्टिंग पक्षियों के घोसलों के लिए उपयुक्त आवास को क्षति पहुंच रही है।

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution